भगवत् कृपा

THE DIVINE GRACE

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली मासिक सत्संग पत्रिका

वर्ष 24 अंक : 1-2 | सोमवार, 26-2-2001 | वार्षिक चंदा : 50-00

ताड़देव की गतिविधियाँ

''भगवत् कृपा'' की आप सब अवश्य राह देख रहे होंगे, क्योंकि 'भगवत् कृपा' का पिछला अंक आपके पास पहुँच नहीं पाया। सर्वप्रथम उसके लिए हम तहेदिल से क्षमाप्रार्थी हैं। जनवरी का पूरा महिना प.पू. गुरुजी लगातार बाहर ही रहे... सो, समय के अभाव व प.पू. गुरुजी के मंदिर में उपस्थित न होने के कारण हम 'भगवत् कृपा' द्वारा आपकी सेवा नहीं कर पाये-आप तक पहुँचा नहीं पाए।

30 दिसम्बर 2000 को प.पू. गुरुजी दिल्ली से ट्रेन द्वारा **प.पू. साहेब के हीरक जयंती** महोत्सव में गुजरात गए... 31 दिसम्बर व 1 जनवरी को 'ब्रह्मज्योति' पर गुणातीत स्वरुपों की सेरेछाया में प.पू. साहेब का हीरक जयंती महोत्सव बहुत धूमधाम से सम्पन्न हुआ... दिल्ली गुणातीत समाज की ओर से प.पू. गुरुजी हीरे के आकार का हार प.पू. साहेब की हीरक जयंती निमित्त ले गए थे। उस हार के पीछे प.पू. गुरुजी की भावना यह थी कि–

'वैसे तो प.पू. साहेब गुणातीत समाज के स्वयं प्रकाशित हीरे हैं...' फिर भी हार में सभी गुणातीत स्वरुपों और अनुपम मिशन के आठ भाईयों की मूर्तियाँ रखी हैं... क्योंकि प.पू. काकाजी कहते थे कि–यह सब अकेले हाथ नहीं बना, धन्यवाद है मेरे साथीदारों को..... मू. अ.मू. गुणातीतानंदस्वामी की बातों में भी आता है कि मेरे अकेले की महिमा गाओगे तो मेरी अपकीर्ति कराओगे... यूं प.पू. साहेब के भगीरथ कार्य का विकासक्रम जो दिखाई देता है वह सभी गुणातीत स्वरुपों की प्रेरणा कहो, आशीर्वाद कहो या देखभाल कहो और अनुपम के आठ भाईयों के सहयोग की फलश्रुति है।'

सच ! सारी व्यवस्था और महोत्सव के दिव्य वातावरण में चारों ओर भक्ति की खुश्बू हर एक के दिल को छू रही थी... पू. शांतिभाई व पू. अश्विनभाई तथा ब्रह्मज्योति के भाईयों और मुक्तों की गुरुभक्ति देख कर सभी का दिल नतमस्तक हो गया... धन्य-धन्य हो इनकी गुरुभक्ति को !

पू. कानजीभाई 'राजकोट' का आग्रह होने के कारण 2 जनवरी की सुबह ब्रह्मज्योति पर प.पू. काकाजी की 'ब्रह्मसमाधि' का दर्शन करके प.पू. गुरुजी राजकोट जाने निकले... वहां पू. करसनभाई, पू. छगनभाई, पू. मगनभाई, पू. गणेशभाई मंडप वाले, पू. चकुभाई वगैरह भक्तों को दर्शन, सेवा, समागम का लाभ देकर अमदावाद गए... वहां पू. पकाई साहेब के दामाद पू. शैलेषभाई–हीपोलीन वाले ने अपने फार्म हाऊस पर खूब अच्छी व्यवस्था कर रखी थी। 4 जनवरी से 7 जनवरी तक अमदावाद के हरिभक्तों को दर्शन, सेवा, समागम का लाभ देकर प.पू. गुरुजी दिल्ली वापिस लौटे...

इसके पश्चात् दिल्ली के हमारे **आत्मीय सत्संगीबंधु पू. दालिया साहब** को हार्ट की तकलीफ आने के कारण अमदावाद में उनकी बाईपास सर्जरी करने का निर्णय हुआ। सो, 17 जनवरी को पू. दालिया साहब के हार्ट ऑप्रेशन के लिए प.पू. गुरुजी फिर अमदावाद गए और... सर्जरी ठीक से हो जाने पर 20 की सुबह ट्रेन से दिल्ली वापिस आए।

20 की सुबह अमदावाद से वापिस आते ही दिल्ली में प.भ. विशाल (जगरांव वाले प.भ. श्यामसुन्दरजी के सुपुत्र) का एपन्डीक्स का ऑप्रेशन होने के कारण उसे अस्पताल 'महावीर' में देखने गए और... प.भ. विनोद के पिताजी **प.भ.**

मनोहरलालजी की त्रयोदशी में हाजिर रहने दोपहर की ट्रेन से **लुधियाना** जाने निकल गए। उन्हें भगवान स्वामिनारायण का आसरा व प.पू. काकाजी, प.पू. गुरुजी के प्रति की निष्ठा, सेवा, भावना-लगाव बेमिसाल था... उनके मुँह से 'स्वामिनारायण' का जाप एक सेकण्ड के लिए भी बंद नहीं होता था। पंजाब में सत्संग की शुरुआत सवद्धी के प.भ. धर्मपालजी व जगरांव के प.भ. मनोहरलालजी से ही हुई और प.भ. मनोहरलालजी ने एक संत की भाँति निष्ठा करने और अन्यों को कराने का ही जीवनभर उद्यम करा। उनकी भक्ति-भावना, विश्वास हर एक को छू जाता था। उनके प.पू. गुरुजी के प्रति के लगाव का एक छोटा–सा प्रसंग निहारें...

एक बार प.भ. मनोहरलालजी का फोन आने पर प.पू. गुरुजी ने उन्हें यूं ही कहा कि वहां जगरांव में सब को 'जय स्वामिनारायण' कहना ! तो, प.भ.मनोहरलालजी साईकिल पर घूम-घूम कर जगरांव के प्रत्येक हरिभक्त के यहाँ विशेष रुप से कहने गए कि प.पू. गुरुजी ने आपको 'जय स्वामिनारायण' कहा है ! महाराज के समय की जो बात कि 'मेरे भक्त बहुत भोले हैं...' वह निश्चितरुप से यहां चरितार्थ होती है। पू. मनोहरलालजी ने अपना जन्म सार्थक कर लिया; उनके परिवार व जगरांव सत्संग मंडल को बहुत बड़ी खोट पड़ी है।

ऐसा ही एक दूसरा प्रसंग निहारें–प.भ. मनोहरलालजी पंजाब के गांव जगरांव में रहते थे। जब भी वे प.पू. गुरुजी को कुछ भेंट देते तो प.पू. गुरुजी उनसे सिर्फ 21 रुपये ही लेते थे और कहते कि आप पू. उत्तमस्वामिजी की सेवा करते ही हो, तो उसमें सब आ गया। एक बार प.भ. मनोहरलालजी ने 101 रुपये की भेंट दी। प.पू. गुरुजी ने फिर वही बात करी। तो, प.भ. मनोहरलालजी बोले कि क्या आप हमें इससे आगे नहीं बढ़ाओगे-आपकी सेवा ज्यादा करेंगे, तभी हमारी आमदनी बढ़ेगी न ? कैसा माहात्मय और शिक्षापत्री में श्रीजी महाराज द्वारा लिखे हुए वचनों पर कितनी नज़र !

21 जनवरी की रात को प.पू. गुरुजी पंजाब से वापिस आए और 25 जनवरी को तो अगस्तक्रान्ति से निकल कर प.भ. अमृत वडियाजी, प.भ. भगवती परिवार, प.भ. सुरेशभाई, प.भ. हरिश वखारियाजी आदि सूरत के हरिभक्तों के आग्रह पर 26 जनवरी को सूरत पहुँचे... 26 जनवरी की सुबह 8.50 पर भूकंप आने की वजह से वहां प.पू. गुरुजी अमदावाद, कच्छ, भुज आदि में रह रहे अपने हरिभक्तों की फ़िकर में लग गए... फोन से सभी हरिभक्तों के सकुशल होने की खबर पूछी... दूसरी ओर भूकंप की घटना के दौरान प.पू. गुरुजी के गुजरात में होने के कारण दिल्ली-पंजाब के हरिभक्त खूब बेचैन हो गए थे, तो इन सभी के भी फोन आ रहे थे...

29 जनवरी-वसंतपंचमी के मंगलकारी दिन **मुंबई–पवई** के **आंतरराष्ट्रीय आध्यात्मिक संशोधन केन्द्र की शिलान्यासविधि** में सम्मिलित होने प.पू. गुरुजी 28 जनवरी की दोपहर को मुंबई पहुँच गए... 29 जनवरी की सुबह गुरुहरि प्र.ब्र.स्व. प.पू. पप्पाजी, प्र.ब्र.स्व. प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. साहेब, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. हरिभाई साहेब, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. गुरुजी, पू. कोठारीस्वामिजी, पू. निर्मलस्वामिजी व संतों की सेरेछाया में पू. वशीभाई एवं पू. विनोदभाई पुरोहित द्वारा बहुत दिव्य व आनंदपूर्ण वातावरण में महापूजा सम्पन्न हुई। उसके बाद सभा में सभी स्वरुपों के आशीर्वाद पाकर मुक्तों ने धन्यता मानी। इस महोत्सव की मुख्य विशेषता यह थी कि प.पू. काकाजी के शब्दों में–'पूरी अक्षरधाम की केबिनेट' स्टेज पर विराजमान थी। यह दर्शन सभी के दिल को अनोखा आनंद दे रहा था। सच में– पू. भरतभाई, पू. वशीभाई, पू. महेन्द्रबापू, पू. घनश्यामभाई अमीन व ताड़देव के भाईयों ने सर्वदेशीय सेवा, भक्ति के अपने वर्तन से प.पू. काकाजी को जीवंत रखा है।

ताड़देव के भाईयों की भक्ति की सराहना करते हुए व दिल से उन्हें अत्यधिक धन्यवाद देते हुए प.पू. गुरुजी ने मार्मिक प्रवचन किया... अब की, पहली ही बार शायद ऐसा था कि प.पू. गुरुजी अपने दिल की बात लिख कर ले गए थे और उन्होंने उसे सभा में पढ़ा... उनके इस चरित्र को देखकर सभी मुक्त भी आश्चर्य में थे। पर जरुर **उनके इस जेस्चर के पीछे भी कोई रहस्य अवश्य छुपा होगा; जो कि हमें अपने भीतर ही ढूंढना पड़े...**

प.पू. गुरुजी का प्रवचन अत्यंत मननीय था... दूर-सदूर रहते हुए सभी मुक्त इससे लाभान्वित हो सकें इस भावना से वह पूरा प्रवचन 'भगवत कृपा' द्वारा आप तक पहुँचा रहे हैं–

'दिल्ली से जब-जब यहां (मुंबई) या गुजरात में–हरिधाम, सांकरदा, विद्यानगर–जहां कहा जाये न कि सत्संग में मैं जन्मा, पला-पोसा और बचपन बिताया–जिसे दिल्ली वाले मज़ाक में कहते भी हैं कि **वह तो गुरुजी का 'पीहर' था–**उन साथीदारों और बड़ों के सान्निध्य में ऐसे अवसरों पर आना होता है; तब इतने सारे प्रसंग स्मृतिपट पर उभर आते हैं– विचारों की हारमाला चल पड़ती है कि प्रासंगिक उद्‌बोधन करने के लिए उस भंवर से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है। सो, विद्यानगर में इस बार प.पू. साहेब की हीरक जयंती पर पू. शांतिभाई ने लिखकर रखा हुआ उनका उद्‌बोधन जब

पढ़ा–तो वह तरीका मुझे पसंद आ गया। इसलिए आज मैं भी मेरी बात–मेरे विचार–मेरी भावना जो लिख कर रखी है वही पढ़ूँगा।

सबसे पहले तो–वसंतपंचमी के ब्र.स्व. स्वामिश्री शास्त्रीजी महाराज के प्रागट्य दिन और ब्र. स्व. प.पू. काकाजी के 50वें साक्षात्कार दिन के उत्सव पर आज यहां प्रत्यक्ष गुणातीत स्वरूपों, ज्योतिर्धरों और मुक्तों की निश्रा में एक मंदिर व अंतरराष्ट्रीय संशोधन केन्द्र की शिलान्यासविधि हुई तब ऐसा लगता है कि–सच में प.पू. काकाजी जो कहते कि गुणातीत का संकल्प यानि महाकाल ! अर्थात् सभी अड़चनों-अवरोधों को हटाकर वह साकार होगा ही। हम दादर मंदिर थे और पू. शर्माजी ने प.पू. बापा की हाज़री में मंदिर के लिए जमीन दी थी, उस निमित्त यहां एक उत्सव हुआ, तब बापा बोले थे– **'यहां से सुहृद्भाव के पूर उमटेंगे.....'**। यहाँ बैठे हुए में से कई पुराने जोगी तब होंगे वे यह जरुर जानते होंगे। प.पू. काकाजी भी यहाँ कई कितनी बार आए–करे, शिविरें करीं, महापूजा करीं, यज्ञ करे और... **ताड़देव के ये भाईयों ने भी वही प्रणाली संभाली है; पू. दिनकरभाई भी उनके साथ ही हैं और उन्होंने प.पू. काकाश्री को अमर कर दिया।** प.पू. काकाश्री ने भी कई बार कहा था कि यहाँ एक इन्टरनेशनल स्पीरीच्युअल रीसर्च सेन्टर खोलना है। यूं बापा और काकाश्री का वह संकल्प पूरा करने आज ये भाईयों ने बीड़ा उठाया है।

इस अद्भुत कार्य की सेवा में जुड़ जाने इन भाईयों ने आज हमें मौका दिया है। तो, यह तो काकाश्री का कार्य ! जिनके हम कहलाए जाते हैं–**'दादुभाई वाले ये–' यूं ही तो हम पहचाने जाते हैं ना ?**

सूर्यनारायण की वाडी का काकाश्री का प्रसंग हमने पू. गोरधनकाका से कई बार सुना है। प.पू. शास्त्रीजी महाराज सूर्यनारायण की वाडी में उतरे थे–उन्होंने बीमारी ग्रहण करी थी और देह में इतनी कमज़ोरी थी कि अपने आप करवट भी ले नहीं सकते थे। लेकिन, जहां उनके कानों में आवाज़ पड़ती कि नाथालाल डॉक्टर के लड़के आए हैं–तब तो मानो उन्हें कुछ है ही नहीं यूं फटाक से बैठे हो जाते थे। काकाश्री का पूर्व का कैसा संबंध होगा उनके साथ ? पू. बा ने बहुत शुरुआत में–जब मुझे 8 नंबर में उनके पास जाने का चसका रहता था–तब बात करी थी कि शास्त्रीजी महाराज स्थूलरूप से अंतर्धान हुए उसके बाद योगीजी महाराज बोले थे कि–

जैसे बली राजा के घर भगवान आज भी पहरा देते हैं, वैसे शास्त्रीजी महाराज दादुभाई के साथ हमेशा के बंधे हुए हैं !

वे काकाश्री–उनके साथ हमें रहने को मिला–उनके हम कहलाए जाते हैं और आज उनके इस कार्य में जुड़ने का हमें सौभाग्य मिला ! बस, इसी भावना से हम सभी लग पड़ें।

'ज्योत' की बहनों ने इस बार की पत्रिका में एक बहुत अच्छी बात लिखी है। पढ़ कर मैं तो इतना खुश हो गया, जिसकी कोई सीमा नहीं। **ये बहनें खुद जाग्रत हैं, तो हमें भी सावधान रखने कैसे झंझोती रहती हैं ?** 'प.पू. काकाजी का साक्षात्कार दिन'– टाईटल नीचे उन्होंने लिखा है : 'काकाजी की स्मृति करते ही-उनकी करुणा को याद करते ही हृदय द्रवित हो जाता है कि हे काका ! आपने हमें सब कुछ दिया है। **अब तो**–खूब ध्यान से सुनें–लिखा है–**'अब तो'–यानि ?** प.पू. काकाजी को स्थूलरूप से अंतर्धान हुए–पंद्रह साल के बाद तो हम **'वह'–यानि** आपने हमें जो ज्ञान–स्वरूपनिष्ठा का और उस स्वरूपलक्षी सुहृद्भाव का–निर्दोषबुद्धि का दिया है वह पचाएं और आपकी खुश्बू फैलाएं। यानि कि– **'दादुभाई' के – 'काकाजी' के जो हम कहे जाते हैं–तो सच में उनके बन कर– उनके सिद्धांत से जीकर उनका परिचय बनें !** खूब-खूब धन्यवाद–कोटी-कोटी वंदन इन बहनों को कि **आज पंद्रह साल के बाद भी हमने प.पू. काकाश्री की बातें पचाई नहीं–उनके पदचिह्नों पर चल नहीं पाये हैं**–उसका उन्होंने हमें ध्यान दिलवाया है और हमें जाग्रत करके सावधान किया है।

उस मार्ग पर–उस सिद्धांत पर हम चलेंगे नहीं और काकाजी के भले कितने ही गुणगान गाया करेंगे–जिसे पू. काकाजी कहते–'नौटंकी करनी' उससे हमें कोई फायदा नहीं होना है।

तो, आज वसंतपंचमी का महामंगलकारी दिन है–यहां शिलान्यासविधि भी हुई और पूर्णाहूति करवाने वाले-प.पू. पप्पाजी, प.पू. स्वामिजी, अक्षरविहारीस्वामिजी, साहेब, दिनकरभाई भी बैठे हैं–उन्हें इतनी ही प्रार्थना कि एकता रखने में–सुहृद्भाव रखने में–निर्दोषबुद्धि पकड़ कर रखने में हमारे जो राग-भाव-वृत्तियाँ बाधारूप होती हैं; उसमें रमते रहने का भले हमें जंचता है ही, लेकिन साथ-साथ आप भी ऐसे ही जंचते हो और यही एक विडंबना है कि आपको जो नहीं जंचता, वही हमें आपके साथ-साथ जंचता है ! तो अब हम कुछ समझदार बनें–सयाने बनें और उसे छोड़ कर, एक 'आध्यात्मिक समाज' का सर्जन करने प.पू. बापा ने जो जंग खेली उसमें सहयोगी बनें और 'भक्त' की संज्ञा में दाखिल हों।

बेशक, सुहृद्भाव का–निर्दोषभाव का फोर्मल ढकोसला हम करते रहे हैं, लेकिन दिल की सच्चाई से अंतर में झाँकेंगे तो भीतर के चोर को पकड़ पायेंगे।

और एक बात स्पष्ट रूप से समझ लें कि **जिन पंचविषय**

के राग या वृत्ति के कारण हमें किसी से अलगाव हो जाता है, वह यदि भजन से–प्रार्थना से या पप्पाजी-स्वामिजी जैसे अतिशय बड़े पुरुष के पास खुले होकर टाला नहीं, तो–हम आज जहाँ मिलेझुले भी होंगे वहां भी कल को अलगाव खड़ा करेंगे, करेंगे और करेंगे ही। ऐसे तो फिर हमारी 'भावात्मक एकता'–वह कहने की ही बनी रहेगी ना ?

गाते तो हैं कि–'ऐसी कौन-सी चीज़ है इस धरातल पर जो हमें खींच जाए–ऐसे प्रभु में रम जाने के बावजूद !'

हम सभी प्रभु में–प्रभु के इन स्वरुपों में लुभाए हैं ही– यह हकीकत है ही। लेकिन, अभी जो हम वर्तते हैं वह तो– 'आटा फांकना और हँसने' जैसी बात है। इस तथ्य को–हे सभी स्वरुपों ! हमारी बुद्धि में उतार दो–ताकि हमारी पूर्णाहूति हो जाए और आपकी सेवा के अधिकारी बनें–यही आज के दिन विराजमान सभी स्वरूपों तथा महाराज एवं स्वामी के चरणों में प्रार्थना !

'आटा फांकना और हँसना जैसी बात' के संदर्भ में एक प्रसंग कहता हूँ। गुणातीतानंदस्वामी के समय का यह प्रसंग हम सभी अकसर कहते हैं–सुनते रहे हैं कि एक चरवाहा जूनागढ़ मंदिर में अपना बैल बेचने आया था। उसके वह 100 कोड़ी माँगता था और कोठारी 80 कोड़ी देने के लिए कह रहे थे। इसी बात पर उन दोनों के बीच में नोंक-झोंक चलती थी। तब बीच में पड़ कर स्वामी ने 120 कोड़ी दिलवा कर बैल को खरीदवाया। और.....उस चरवाहे को स्वामी का इतना गुण आ गया कि हमेशा के लिए वह स्वामी का–मंदिर का हो गया ! यह प्रसंग स्वामी की जीवनशैली दर्शाता है। **संबंध में जो भी आये उसके जीव का–चैतन्य का कुछ भी लूटा कर उत्थान करना**–उसके जीव को कैसे भी बल देना उस पर ही उनकी तान रहती। **'हमारी हर एक क्रिया जीवलक्षी होनी चाहिए; ना कि–हेतुलक्षी' कह कर प.पू. पप्पाजी ने भी तो इसी बात को हमें समझाया है ना ?**

यह प्रसंग कथाओं में हमने कई–कितनी बार कहा है– सुना है और सभी के बीच **स्वामी की उस जीवनशैली का अनुसरण करने का हम जैसे दिखावा भी करते हैं !** लेकिन– वह **एक अच्छाई पेशी लूटने, ना कि जीवलक्षी सेवा करने !** यहां जरूर सोचना चाहिए कि यह हमारी सहज जीवनशैली बनी है क्या ?

दिखावा करना आध्यात्मिक कक्षा का और वर्तना बिलकुल हेतुलक्षी–इसे मैंने कहा कि हंसना और आटा फांकने जैसी बात है। यह तो एक स्थूल दृष्टांत है। उसी प्रकार, प.पू. काकाश्री के सिद्धान्तों की हम भले कितनी ही बातें करा करें या **ऐसी भावात्मक एकता का ऊपरी-ऊपरी दिखावा करा करें;** पर– एक बात समझ लें कि **हम सब को धोखा दे पायेंगे–खुद की आत्मा को भी धोखा दे सकेंगे, लेकिन–तन की जाने, मन की जाने, जाने चित्त की चोरी–ऐसे प्रभु को धोखा नहीं दे पायेंगे।**

तो, आज प.पू. काकाश्री के साक्षात्कार की अर्धशताब्दी के वर्ष में जब हम प्रवेश कर रहे हैं तब एक प्रार्थना है कि–**ये धोखाधड़ियाँ–लुकाछिपीयाँ–आँखमिचौली अब हम बिलकुल छोड़ दे और अंतर से एकजुट होकर आप सभी स्वरूपों के दिल में ठंडक कर दें।**

और–**ताड़देव के इन नौ भाईयों ने** जो बीड़ा उठाया है, वह देख कर मस्तक नत हो जाता है। हम देखते हैं कि उन्होंने **ऐसे कोई भगवे वस्त्र नहीं पहने, ना ही ऐसा कोई ड्रेस लिया, लेकिन अंतर से ऐसे सच्चे साधु के पदचिह्नों पर चलते रहे हैं और कभी भी किसी के पास हाथ फैलाए बिना मूक रह कर,** बस–**सभी को प.पू. काकाजी का स्वरुप समझ कर सभी की सेवा करके पू. काकाजी को जीवंत रखे हैं।** समग्र गुणातीत समाज की उन्होंने यह बहुत भारी सेवा करी है और उसी राह पर हम सभी अग्रसर हों यही आज के मंगलकारी अवसर पर अंतर की प्रार्थना !

अंत में 26 जनवरी को आए भूकंप ने जो तबाही मचाई है उससे लगता है कि कुदरत का खौफ उतरा है। और.....ऐसे हालात में तो प.पू. काकाजी द्वारा बार-बार दोहराई गई करामात कि–हर एक छोटी मोटी क्रिया प्रभु का सिमरन करके ही करने की हमारी आदत बन जाए ताकि प्रगट प्रभु हमारी रक्षा करते रहें–यही प्रार्थना !'

✡✡✡✡✡

विनाशकारी भूकंप के प्रकोप पर भजन का सर्वोपरि उपाय व हर प्रकार से सहायता...

26 जनवरी 2001 की सुबह 8.50 पर अकल्पनीय प्राकृतिक प्रकोप के कारण दिल दहला देने वाली भूकंप की विनाशकारी घटना ने गुजरात के अमदावाद, कच्छ, भुज, जामनगर, राजकोट और अन्य कई प्रान्तों को तबाही के घेरे में ले लिया... कई हजारों लोग असमय मृत्यु को पाए। कई तो पूरे के पूरे गांव ही मलबे के ढेर में बदल गए... दूसरे हजारों लोग घर से बेघर होकर सड़क पर आ गए... केवल टी.वी. पर ऐसे करुणाजनक दृश्य देख कर अपना

दिल चीत्कार उठता है, तो जो लोग इस भयंकर परिस्थिति में से गुज़रे हैं, उनकी हालत का अन्दाजा तक लगाना कठिन है...

अनेक स्वयंसेवी संस्थाओं और सरकार द्वारा आपत्तिग्रस्त लोगों को सहायता देने का अविरत प्रयास चालू ही है... स्वामिनारायण संप्रदाय की सभी संस्थाएँ एकजुट होकर संतों और स्वयंसेवकों द्वारा राहत कार्य के लिए कम्बल, कपड़े, खाने के तैयार पैकेट्स, राशन का सामान, लंगर, पानी, टेन्ट, दवाईयाँ आदि की सेवा से फंसे लोगों की मदद के लिए हर संभावित सहायता में अत्यंत सक्रिय रुप से युद्धस्तर पर लग पड़ी हैं।

इन मुश्किल परिस्थितियों में स्वामिनारायण संप्रदाय के संतों और स्वयंसेवकों के दिन-रात के अनथक् परिश्रम, सांत्वना एवं अत्यधिक सहकार ने भूकंप पीड़ितों के घावों पर जैसे मलहम का काम किया। इसके अतिरिक्त सभी गुणातीत स्वरुपों, संतों व मुक्तों ने असमय मृत्यु को पाए हजारों लोगों की आत्मा की शांति के लिए और परिवारजनों को इस आपत्ति का सामना करने अटूट आत्मबल मिले... सब का भला हो तथा पुनः गुजरात में खुशहाली व स्वस्थता का माहौल जल्दी ही सर्जित हो जाए इस हेतु धून्य, प्रार्थना, भजन चालू ही रखा है।

प.पू. गुरुजी ने गुजरात में अमदावाद, राजकोट, कच्छ, भुज आदि में रह रहे सभी हरिभक्तों को इस हेतु विशेष रुप से नियमित भजन करने की आज्ञा दी है और 4 मई– गुरुहरि प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी की जन्मजयंती तक रोज़ शाम को 7.00 बजे धरती का पूजन करके दीपक जला कर माथा टेक कर प्रार्थना करने कहा है कि–

हे धरती माँ ! आप शांत होओ, आप शांत होओ ! और दोबारा कभी आपका ऐसा विनाशकारी खौफ ना उतरे !

आश्चर्य की बात तो यह हुई कि प.पू. गुरुजी ने हरिभक्तों को जब यह आज्ञा दी कि उसके थोड़े दिन बाद अखबार में गुजरात के लोगों द्वारा किए जा रहे धरती पूजन व दीपक जला कर प्रार्थना करने पर लेख आया... ऐसा अधिकतर हुआ ही है कि प.पू. गुरुजी कोई बात करते हैं, तो उसका जस्टिफिकेशन देने मानो प.पू. काकाजी यूं हमें जाग्रत करते हैं कि प.पू. गुरुजी के रुप में हमें जो स्वरुप मिला है, वह हमें प्रभु प्रेरित ही सुझाव देता है।

✡✡✡✡✡

7 मार्च.... प्रार्थना करने का दिन !!

प.पू. काकाजी का स्थूल शरीर छोड़ने का दिन- स्वधामगमन दिन !

हम सब के लिए विशिष्ट स्मृतियाँ, भजन-प्रार्थना करने का दिन...

सुरुचि रख कर कृतनिश्चयी बन कर प्रभु के बल से दौड़ने का दिन !

गुरुचरणों में समर्पित होकर भुलका बनने की यात्रा की ओर नज़र रख कर जीने का दिन...

अपनी 'स्व' की अस्मिता को पिघाल कर केवल 'तूं ही तूं ही' के सागर में खुद को विलीन करने का दिन !

प.पू. काकाजी जैसी प्रभु सांगोपांग धारण करी हुई विभूति हमारे जीवन में आई... हमने तप, व्रत, कोई कठिन साधना भी नहीं की थी ना ही उन्हें ढूंढने का कोई प्रयास किया था। पर, सामने से गरजु बन कर केवल कृपा करके वो अलमस्त मूर्ति ने हमें अपना अनमोल संबंध दिया... 'ए टु झेड' क्लास के सभी के निजी जीवन में हर एक की कक्षा पर आकर रसबस हुए... और जब तक स्थूल शरीर में विराजमान थे तब तक अपने भजन से, कई लाड़ लड़ा करके, तो कभी-कबार डाँट कर भी मूर्ति की स्मृतियाँ दे देकर हमारी चेतना की स्पीडी प्रगति के लिए निरंतर लगे रहे और... आज पंद्रह साल के बाद भी वे पहले से अधिक हमारी चेतना की प्रगति के लिए दिव्य रुप से हमारा हर प्रकार से जतन कर रहे हैं...

हमें कई कितने अनुभव करा कर अंतर में शांति दी... हम उसे कर्ता हर्ता मान कर प्रभु के बल से जीते हो जाएं, बस यही एक चाहना से संबंध में आए हर एक के लिए दिन-रात देखे बिना वे अथक परिश्रम करते रहे... हम हर एक प्रसंग पर भजन का एकमात्र आधार लें उसके लिए उन्होंने स्वयं भजन कर करके सिखाया... सुहृद्भाव, निर्दोषबुद्धि के पाठ उपदेश से नहीं, वरन् अपनी जीवनशैली से बताया... हमारी मायिक दृष्टि से उनकी कृपा का छोर पाना आज भी संभव नहीं... लगता है–आज भी उनकी आँखें निरंतर हमारी ओर देख रही हैं कि अब भी हम जागृत बने हैं या नहीं–या अभी भी अपने मन, वत्तियों, स्वभावों के दायरों में फंस कर समय गवां रहे हैं ?

हे काकाजी ! इतने-इतने पाठ सिखाने के बाद अभी भी मूलवृत्ति को कोई हिला जाता है-या देह पर थोड़ा भी कष्ट आता है या थोड़ा-सा भी व्यावहारिक विपरीत देशकाल आ पड़ता है तब धीरज नहीं रहती। तुरंत मायिकभाव में चले जाते हैं–बौद्धिक मूल्यांकनों के भंवर में फंस ही जाते हैं। प्रसंग पर महिमा नहीं रहती... दूसरों को नापते रहते हैं... तो अब सत्संग, सेवा, स्वाध्याय की आदत डालें... केवल महिमा प्रधान, केवल संबंध वाली ही दृष्टि से निहारें। हे प्रभु ! हम ऐसे सच्चे साधु बनें...

तो, आज के दिन अंतर से रो-रोकर भजन करके प्रार्थना करें कि दूसरों का दोष-स्वभाव-प्रकृति देखे बिना हम पहले हमारा पूरा करा लें... सतत् आपके अनुसंधान में रह कर अंतःदृष्टि से जीएं... इस दिव्य समाज में आपने हमें रख दिया है... इन मुक्तों की महिमा समझ कर धन्यवाद-धन्यवाद आपको दें... ज्यादा सयानापन और ज्यादा भोलापन दोनों ही खतरनाक हैं। तो, अब हमारी कोन्सशियसनेस छोड़ कर प्रभु की मूर्ति में रहने की आदत डालें।

हे काकाजी ! आप चिदाकाश का साक्षात् स्वरुप थे; तो, आपके जैसी चिदाकाश की दृष्टि हमें बख़्शिश में दीजिए ना ! चिदाकाश की भूमिका में बाऊंड्रीलाईन का कोई स्थान नहीं है, वहां कोई अपना-पराया नहीं है, कोई गुरुतंती नहीं है ना कोई भेदभाव है... केवल एक महाराज का संबंध... ऐसी आत्मीयता और भावात्मक एकता में आप हमें कृपा करके ले जाईए !

Statement about Ownership and other particulars about news paper

'भगवत-कृपा'– 'THE DIVINE GRACE'

(Form IV Rule 8)

1. Place of Publication	:	Yogi Divine Society Tardeo, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052
2. Periodicity of its Publication	:	Monthly
3. Printer's Name	:	Prabhaker Rao
4. Nationality	:	Indian
Address	:	44-C, Janta flats, Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52
5. Publisher's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
6. Editor's Name	:	
Nationality	:	As above
Address	:	
7. Owner's Name	:	Yogi Divine Society
Nationality	:	Indian
Address	:	Tardeo, Kakaji Lane Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-52

I, Prabhaker Rao, hereby declare that the particulars given above are true to the best of my knowledge and belief.

Sd/-
PRABHAKER RAO
Date: 25 February, 2001 Signature of Publisher

व्रतोत्सवसूची

(1) दि. 6.3.2001 मंगलवार – एकादशी, व्रत

(2) दि. 9.3.2001 शुक्रवार – होली
ब्र.स्व. भगतजी महाराज की प्रागट्य दिन

(3) दि. 10.3.2001 शनिवार – धुलेन्डी
प्र. ब्र.स्व. प.पू. साहेब की प्रागट्य दिन

(4) दि.13.3.2001 मंगलवार – प.पू. गुरुजी का प्रागट्य दिन जो कि 31 मार्च, शनिवार की शाम को धून-भजन-सत्संग करके मनायेंगे।

(5) दि. 20.3.2001 मंगलवार – एकादशी, व्रत

Air Mail
'**Bhagwatkripa**' Monthly Magazine
Despatched on 25/26 of every month
If undelivered please return to :—
Owner, Publisher, Editor :—
SHRI PRABHAKER RAO *FOR* YOGI DIVINE SOCIETY-DELHI
'Tardeo', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg,
Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 7229327, 7249327
Type Setting : **SHAYOKA Type Setting**
Rama Vihar, Delhi-110081 Phone: 5483035
Printed at : **Bharat Packaging and Allied Industries**
C-2/12, Mayapuri Industrial Area, Phase-II, New Delhi-110 064
Tel.: 5401210, 5402393

TO,